

Chandigarh Press Conference

Publication: Himachal Dastak

Page: 9

City: Chandigarh

Date: 18-06-2017

चंडीगढ़ को स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की जरूरत

हिमाचल दस्तक। चंडीगढ़

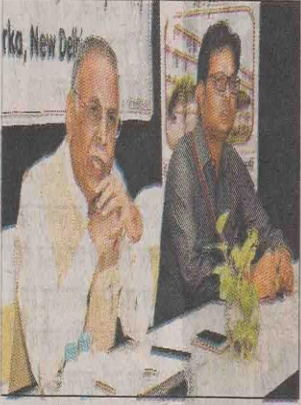
हालांकि देश ने अपने स्वास्थ्य क्षेत्र में प्रगति की है, लेकिन इसके साथ ही मौजूदा स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक मजबूत बनाने के लिए खासकर ग्रामीण इलाकों में लोगों की

स्वास्थ्य आवश्यकताओं की देखभाल के लिए पेशेवरों की संख्या में वृद्धि करने की जरूरत है। आईआईएचएमआर दिल्ली के निदेशक डॉ. संजीव कुमार ने ये बातें कहीं। वे इस मुद्दे पर प्रकाश डालने के लिए यहां एक संवाददाता सम्मेलन में बोल रहे थे।

डॉ. कुमार ने जोर देकर कहा कि हाल के वर्षों में भारत में स्वास्थ्य परिदृश्य में बदलाव आया है। गैर-संचारित रोग जैसे कि रक्तचाप, मधुमेह और कैंसर जानलेवा बीमारियों के रूप में उभरे हैं। भारत में एक साल इनके कारण लगभग 1 करोड़ लोगों की मौत हो जाती है, 60 लाख

मौतें दिल के रोग, कैंसर, मधुमेह आदि के कारण होती हैं। 12 लाख लोग चोट लगने और दुर्घटनाओं के कारण मर जाते हैं। शेष 28 लाख मौतें गर्भाशय संबंधित बीमारी और संक्रमण के कारण हो जाती हैं। मार्च 2017 में जारी

किए गए नए स्वास्थ्य सर्वेक्षण में ये बातें सामने आयी हैं। इन स्थितियों को सुधारने के लिए विभिन्न क्षेत्रों की स्थिति में सुधार करने और इसके व्यापक बनाने की आवश्यकता है। चौथे राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के हालिया रिपोर्ट से पता चला है कि चंडीगढ़ अपने स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार करने में सफल रहा है फिर भी वर्तमान स्थिति में सुधार की आवश्यकता है। यहां मां एवं बच्चे की सेहत में सुधार करने के लिए स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक सुदृढ़ बनाने की जरूरत है। इसके लिए अतिरिक्त संसाधनों, पैसे और निजी शर्तों पर पर्याप्त निवेश की आवश्यकता होगी।

Publication: Aaj Samaj**Page: 3****City: Chandigarh****Date: 17-06-2017**

प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान जानकारी देते डॉ. अशोक कुमार।

चंडीगढ़ को स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की जरूरत : डा. संजीव

चंडीगढ़। आईआईएचएमआर दिल्ली ने चंडीगढ़ में प्राथमिक और द्वितीयक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में स्वास्थ्य कर्मियों की संख्या एनएचएम के दिशा-निर्देशों के अनुसार होने की सिफारिश की है। साथ ही राज्य के लिए स्वास्थ्य के वर्तमान बजट को अगले 5 वर्षों में मौजूदा स्वास्थ्य बजट

को बढ़ाकर दो गुना कर देना चाहिए। वह बात वीरवार को होटल ताज सेक्टर-17 में प्रेसवार्ता के दौरान आईआईएचएमआर दिल्ली के निदेशक डॉ. संजीव कुमार ने साझा की। इस बीच उन्होंने कहा कि हालांकि, भारत ने अपने स्वास्थ्य क्षेत्र में प्रगति की है, लेकिन इसके साथ ही मौजूदा

स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक मजबूत बनाने के लिए खासकर ग्रामीण इलाकों में लोगों की स्वास्थ्य आवश्यकताओं की देखभाल के लिए पेशेवरों की संख्या में वृद्धि करने की जरूरत है। डॉ. कुमार ने जोर देकर कहा कि हाल के वर्षों में भारत में स्वास्थ्य परिटुष्य में बदलाव आया है।

गैर-संचारित रोग जैसे कि रक्तचाप, मधुमेह और कैंसर जानलेवा बीमारियों के रूप में उभरे हैं। भारत में एक साल इनके कारण कारण लगभग 1 करोड़ लोगों की मौत हो जाती है। 60 लाख मौतें दिल के रोग, कैंसर, मधुमेह आदि के कारण होती हैं। 12 लाख लोग चोट लगने और दुर्घटनाओं के

कारण मर जाते हैं। शेष 28 लाख मौतें गर्भासय संबंधित बीमारी और संक्रमण के कारण हो जाती हैं। मार्च 2017 में जारी किए गए नए स्वास्थ्य सर्वेक्षण में ये बातें सामने आयी हैं। इन स्थितियों को सुधराने के लिए विभिन्न क्षेत्रों की स्थिति में सुधार करने और इसके व्यापक बनाने की आवश्यकता

है। चौथे राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के हालिया रिपोर्ट के अनुसार चंडीगढ़ अपने स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार करने में सफल रहा है, फिर भी वर्तमान स्थिति में सुधार की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, गर्भवती महिलाओं के लिए पूर्व-प्रारंभिक जांच की सुविधा मात्र 34.7 प्रतिशत ही उपलब्ध है।

Publication: Aj Di Awaz

Page: 6

City: Chandigarh

Date: 17-06-2017

ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਨੂੰ 62 ਫੀਸਦੀ ਜਿਆਦਾ ਸਿਹਤ ਸੇਵਾ ਪ੍ਰਦਾਤਾਵਾਂ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ

ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ • ਹਰੀਸ਼ ਚੰਦਰ ਬਾਗਾਂਵਾਲਾ-ਹਾਲਾਂਕਿ, ਭਾਰਤ ਨੇ ਆਪਣੇ ਸਿਹਤ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਤਰੱਕੀ ਕੀਤੀ ਹੈ, ਪਰ ਇਸਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਮੌਜੂਦਾ ਸਿਹਤ ਸੇਵਾਵਾਂ ਨੂੰ ਹੋਰ ਜਿਆਦਾ ਮਜ਼ਬੂਤ ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਖਾਸਕਰ ਪੇਂਡੂ ਇਲਾਕੀਆਂ ਵਿੱਚ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਸਿਹਤ ਜ਼ਰੂਰਤਾਂ ਦੀ ਦੇਖਭਾਲ ਲਈ ਪੇਸ਼ੇਵਰਾਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਵਿੱਚ ਵਾਧਾ ਕਰਨ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੈ, ਆਈਆਈਐਚਐਮਆਰ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਨਿਦੇਸ਼ਕ ਡਾ. ਸੰਜੀਵ ਕੁਮਾਰ ਨੇ ਕਿਹਾ। ਉਹ ਇਸ

ਮੁੱਦੇ ਉੱਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਪਾਉਣ ਲਈ ਇੱਥੇ ਇੱਕ ਪੱਤਰ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਸਮੇਲਨ ਵਿੱਚ ਬੋਲ ਰਹੇ ਸਨ। ਡਾ. ਕੁਮਾਰ ਨੇ ਜ਼ੋਰ ਦੇਕੇ ਕਿਹਾ ਕਿ, ਹਾਲ ਦੇ ਸਾਲਾਂ ਵਿੱਚ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਸਿਹਤ ਪਰਿਦ੍ਰਸ਼ਿਅ ਵਿੱਚ ਬਦਲਾਵ ਆਇਆ ਹੈ। ਗੈਰ - ਸੰਚਾਰਿਤ ਰੋਗ ਜੀਵੋਂ ਕਿ ਰਕਤਚਾਪ, ਮਧੁਮੇਹ ਅਤੇ ਕੈਂਸਰ ਜਾਨਲੇਵਾ ਬੀਮਾਰੀਆਂ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਉਭਰੇ ਹਨ। ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਹਰ ਸਾਲ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕਾਰਨ ਲੱਗਭੱਗ 1 ਕਰੋੜ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਮੌਤ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

Publication: Daily Post**Page: 5****City: Chandigarh****Date: 17-06-2017**

Punjab and Haryana have poor spending on health: NFHS 2015-2016

SAJAN SHARMA
Chandigarh

Punjab has made progress in its health indicators, it needs to strengthen its existing health services and add significantly to the numbers of professionals especially in rural areas, to take care of its people's health needs. Non-communicable diseases such as blood pressure, diabetes and cancers have emerged as major killers in state.

The recent release of 4th National Family Health Survey (NFHS) shows that while Punjab has succeeded in improving its health indicators, the current situation leaves a lot more room for improvement. For instance, while the coverage of antenatal checkups for pregnant women are only 30.7 percent.

Health experts suggest that the number of health

personnel in primary and secondary healthcare system in Punjab should be as per the NHM guidelines and an increased health budget for the state to the tune should be twice of existing health budget over the next 5 years.

Despite being affluent states, both Punjab and Haryana fare badly when it comes to spending on public health. The recently released National Health Profile-2017 shows that both are at the bottom as compared to their neighbours as far as government expenditure is concerned.

According to the profile, with Rs 1001 per capita health expenditure (2014-15), Punjab is at the bottom as compared to their adjoining states. Haryana is closely followed by Punjab with a per capita spending of Rs 1055.

Both Himachal and Chandigarh are way ahead of the

HIGHLIGHTS

- *Infant mortality rate (IMR) is now 29 per 1,000 live births and Under 5 mortality rate is now 33 per 1,000 live births in Punjab. Currently there are about 56.6 per cent children in Punjab in the age group of 6-59 months who are anaemic.*
- *There are 42 per cent of pregnant women aged between 15-49 years who are anaemic.*
- *Children in the age group of 12-23 months are fully immunized and having BCG, measles, 3 doses each of polio and DPT are 89 per cent in Punjab.*
- *In Punjab 21.2 per cent people covered by a health scheme or health insurance followed by Chandigarh 21.3 per cent, Himachal Pradesh 25.8 per cent and Haryana 12.2 per cent.*
- *Punjab and haryana, the average out of pocket expenditure per delivery in public health facility is Rs 1890 and Rs 1503 respectively. On the other hand Himachal Pradesh and Chandigarh spend Rs 3329 and Rs 2357 on this front. Punjab 2.8 per cent is ahead of others state as far as childrens who born at home and taken to a health facility for check-up within 24 hours of birth is concerned.*

Official Speak

"50 percent dependency on private hospitals by urban population is adding to the health-care bill extensively in the state and needs to be tackled immediately. According to the indicators, on maternal and child health front Punjab people are more aware than other neighbouring states. 75.6 percent of mothers in Punjab had antenatal checkup in the first trimester. Figure are well ahead of Himachal Pradesh 70.25 percent, Haryana 63.2 percent and even Chandigarh 34.7 percent," Director of International Institute of Health Management Research (IIHMR) Dr Sanjiv Kumar.

two states with per capita expenditure of Rs 2228 and Rs 1823 respectively. Under such an important head, Punjab and Haryana are spending less than 1 percent respectively of their Gross State Domestic Product. According to health economics experts, this is forcing people to spend more money from their own pockets to get health facilities.

National Sample Survey Organisation done a survey which finds people of Punjab spend the most of their money on medical treatment in the country. The survey concluded that if a person gets hospitalised, he or she has to spend Rs 28,539 on an average in the state. In Haryana, the average medical expenditure per hospitalisation case is Rs 24,000 - Chandigarh spends Rs 34,658, respectively.

Publication: Punjabi Jagran

Page: 3

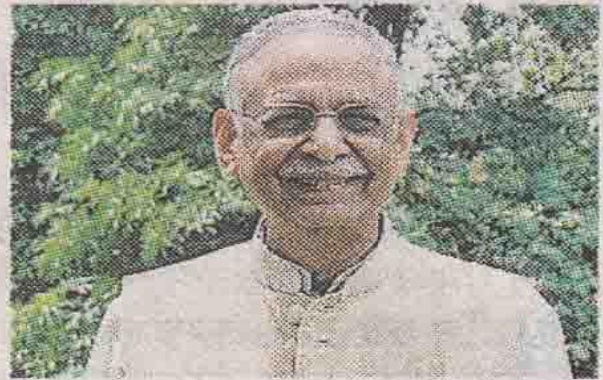
City: Chandigarh

Date: 17-06-2017

ਪੇਂਡੂ ਖੇਤਰਾਂ 'ਚ ਸਿਹਤ ਸਹੂਲਤਾਂ ਦੀ ਲੋੜ : ਡਾ. ਸੰਜੀਵ ਕੁਮਾਰ

ਐੱਸ. ਸ਼ਿੰਦਰ, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ

ਭਾਰਤ ਨੇ ਆਪਣੇ ਸਿਹਤ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਤਰੱਕੀ ਕੀਤੀ ਹੈ, ਪਰ ਇਸਦੇ ਨਾਲ ਸਿਹਤ ਸੇਵਾਵਾਂ ਨੂੰ ਹੋਰ ਜ਼ਿਆਦਾ ਮਜ਼ਬੂਤ ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਖ਼ਾਸਕਰ ਪੇਂਡੂ ਇਲਾਕਿਆਂ ਵਿਚ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਸਿਹਤ ਸੰਭਾਲ ਵਿਚ ਵਾਧਾ ਕਰਨ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੈ। ਇਹ ਗੱਲ ਆਈਆਈਐਚਐਮਆਰ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਨਿਰਦੇਸ਼ਕ ਡਾ. ਸੰਜੀਵ ਕੁਮਾਰ ਨੇ ਪੱਤਰਕਾਰਾਂ ਨਾਲ ਗੱਲਬਾਤ ਦੌਰਾਨ ਕਹੀ। ਡਾ. ਕੁਮਾਰ ਨੇ ਜ਼ੋਰ ਦੇ ਕੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਹਾਲ ਦੇ ਸਾਲਾਂ ਵਿਚ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਗੈਰ-ਸੰਚਾਰਤ ਬਿਮਾਰੀਆਂ ਦਾ ਉਭਾਰ ਆਇਆ ਹੈ ਜਿਵੇਂ ਬਲੱਡ ਪ੍ਰੈਸ਼ਰ, ਸ਼ੂਗਰ ਤੇ ਕੈਂਸਰ ਆਦਿ। ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਹਰ ਸਾਲ 1 ਕਰੋੜ ਮੌਤਾਂ 'ਚੋਂ 60 ਲੱਖ ਮੌਤਾਂ ਦਿਲ ਦੇ ਰੋਗ, ਕੈਂਸਰ, ਸ਼ੂਗਰ ਆਦਿ ਕਾਰਨ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। 12 ਲੱਖ ਲੋਕ ਸੱਟਾਂ ਲਗਣ ਤੇ ਹਾਦਸਿਆਂ ਕਾਰਨ ਮਾਰੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਬਾਕੀ 28 ਲੱਖ ਮੌਤਾਂ ਗਰਭਾਸ਼ੇ ਸਬੰਧਤ ਰੋਗਾਂ ਤੇ ਇਨਫੈਕਸ਼ਨ ਕਾਰਨ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਮਾਰਚ 2017 ਵਿਚ ਜਾਰੀ ਕੀਤੇ ਗਏ ਨਵੇਂ ਸਿਹਤ ਸਰਵੇਖਣ ਵਿਚ ਇਹ ਗੱਲਾਂ ਸਾਹਮਣੇ



ਡਾ. ਸੰਜੀਵ ਕੁਮਾਰ।

ਆਈਆਂ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਹਲਾਤਾਂ ਵਿਚ ਸੁਧਾਰ ਲਈ ਵੱਖਰੇ ਖੇਤਰਾਂ ਦੀ ਹਾਲਤ ਵਿਚ ਸੁਧਾਰ ਤੇ ਵੱਡੇ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕਰਨ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ। ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਸਿਹਤ ਸਰਵੇਖਣ ਦੀ ਤਾਜ਼ਾ ਰਿਪੋਰਟ ਤੋਂ ਪਤਾ ਚਲਿਆ ਹੈ ਕਿ ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਆਪਣੇ ਸਿਹਤ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਸਫਲ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਫੇਰ ਵੀ ਵਰਤਮਾਨ ਹਾਲਤ ਵਿਚ ਸੁਧਾਰ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ। ਡਾ. ਸੰਜੀਵ ਕੁਮਾਰ ਨੇ ਇਹ ਵੀ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸ਼ਹਿਰੀ ਆਬਾਦੀ ਦੀ ਨਿੱਜੀ ਹਸਪਤਾਲਾਂ 'ਤੇ 50 ਫੀਸਦੀ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਨਿਰਭਰਤਾ ਹੈ, ਇਹ ਰਾਜ ਵਿਚ ਵੱਡੇ ਪੱਧਰ ਉੱਤੇ ਸਿਹਤ ਦੇਖਭਾਲ ਬਿੱਲ ਨੂੰ ਵਧਾ ਰਹੇ ਹਨ ਅਤੇ ਇਸ ਤੇ ਤੁਰੰਤ ਕਾਬੂ ਪਾਉਣ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ।

Publication: Dainik Bhaskar

Page: 2

City: Chandigarh

Date: 16-06-2017

चंडीगढ़ को 62 फीसदी और हेल्थकेअर प्रोवाइडर चाहिए

चंडीगढ़ | चंडीगढ़ में हेल्थ सेक्टर में लगातार सुधार के बावजूद अभी भी यहां हेल्थ सेक्टर में बड़े सुधार की जरूरत है। क्योंकि चंडीगढ़ को हर सेक्टर में 62 फीसदी हेल्थकेअर प्रोवाइडर की जरूरत है। क्योंकि अभी भी शहर में 34.7 फीसदी गर्भवती महिलाओं को एंटे नेटल चैकअप की सुविधा मिल पा रही है। हालांकि 2006-07 के मुकाबले शहर की प्रेगनेंट महिलाओं को मिलने वाली पोस्ट नेटल सर्विस में सुधार हुआ है। 2006-07 में सात में से एक महिला को ये सुविधा मिल पा रही थी। अब दो में से एक को मिलेगी।

Publication: Dainik Jagran

Page: 5

City: Chandigarh

Date: 16-06-2017

50 फीसद लोग प्राइवेट अस्पतालों के सहारे

चंडीगढ़ : पूरे उत्तर भारत में बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के लिए चंडीगढ़ को ख्याति प्राप्त है लेकिन विशेषज्ञों की राय में स्वास्थ्य क्षेत्र में अभी भी 62 फीसद स्टाफ कम है। जिसका खमियाजा मरीजों को भुगतना पड़ रहा है। इस बात का खुलासा नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ मैनेजमेंट रिसर्च (आइआइएचएमआर) के निदेशक संजीव कुमार ने नई दिल्ली में आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में वीरवार को किया। प्रेस कांफ्रेंस डॉ. संजीव ने बताया कि चौथे नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे से पता चला चंडीगढ़ के अस्पतालों में और कमरों की जरूरत है। अभी भी गर्भवती महिलाओं को चेक करने के लिए मात्र 34.7 महिला अटेंडेंट हैं। दो में से एक महिला को प्रसव के समय सब तरह की सुविधा मुहैया होती है। इसका एक प्रमुख कारण है सुविधाओं के मुकाबले कम बजट मुहैया होना। उन्होंने कहा कि अभी भी 50 फीसद लोग स्वास्थ्य सेवाओं के प्राइवेट अस्पताल निर्भर हैं।

Publication: Divya Himachal

Page: 7

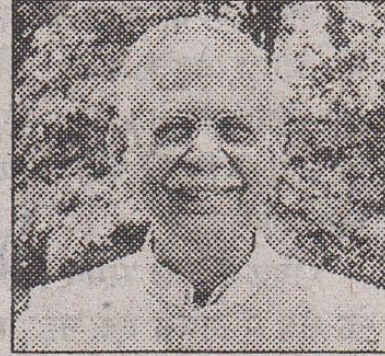
City: Chandigarh

Date: 16-06-2017

बेहतर सेवाओं के लिए और डाक्टरों की जरूरत

✽ निजी संवाददाता, चंडीगढ़

भारत ने अपने स्वास्थ्य क्षेत्र में प्रगति की है, लेकिन इसके साथ ही मौजूदा स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक मजबूत बनाने के लिए खासकर ग्रामीण इलाकों में लोगों की स्वास्थ्य आवश्यकताओं की देखभाल के लिए पेशेवरों की संख्या में वृद्धि करने की जरूरत है। आईआईएचएमआर दिल्ली के निदेशक डा. संजीव कुमार ने यह बात एक संवाददाता सम्मेलन में गुरुवार को कही। डा. कुमार ने जोर देकर कहा कि हाल के वर्षों में भारत में स्वास्थ्य परिदृश्य में बदलाव आया है। गैर-संचारित रोग जैसे कि रक्तचाप, मधुमेह और कैंसर जानलेवा



बीमारियों के रूप में उभरे हैं। भारत में एक साल इनके कारण लगभग एक करोड़ लोगों की मौत हो जाती है, 60 लाख मौतें दिल के रोग, कैंसर, मधुमेह आदि के कारण होती हैं। 12 लाख लोग चोट लगने और दुर्घटनाओं के कारण मर जाते हैं। शेष 28 लाख मौतें गर्भाशय संबंधित बीमारी और संक्रमण के कारण हो जाती हैं। मार्च 2017 में जारी किए गए नए स्वास्थ्य सर्वेक्षण में ये बातें सामने आई हैं।

Publication: Hindustan Times

Page: 2

City: Chandigarh

Date: 16-06-2017

‘UT needs 62% more healthcare providers’

HT Correspondent

■ chandigarh@hindustantimes.com


CHANDIGARH: “To provide adequate health services, Chandigarh needs 62% more healthcare providers,” said Dr Sanjiv Kumar, director, International Institute of Health Management Research, New Delhi.

Dr Kumar shared this information during a press conference organised by IIHMR at Taj hotel, Sector 17, Chandigarh, on Thursday.

He said, “In Chandigarh, only 50% children receive a health check within two days of birth and 73.1% children (6-59 months) are anaemic.”

Dr Kumar also said that 50% dependency on private hospitals by urban population is adding to the healthcare bill extensively in the state and needs to be tackled immediately.

He said that the coverage of antenatal checkups for preg-

 In Chandigarh, only 50% children receive a health check within two days of birth and 73.1% children (6-59 months) are anaemic.

DR SANJIV KUMAR, director, International Institute of Health Management Research, New Delhi

nant women is only 34.7%. “Similarly, 1 in 2 women receives post-natal services currently, a significant improvement over the 1 in 7 women that received these services in 2006-7, but leaves behind half of all the new mothers,” Dr Kumar said.

IIHMR Delhi recommended that an increased health budget for the state should be twice of existing budget over the next five years.

Publication: Punjab Kesari

Page: 2

City: Chandigarh

Date: 16-06-2017

62 प्रतिशत ज्यादा हैल्थ एक्सपर्ट की जरूरत

चंडीगढ़, 15 जून (पाल): राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे की हालिया रिपोर्ट में पता चला है कि चंडीगढ़ अपने स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार तो कर रहा है लेकिन इसके बावजूद स्थिति में सुधार की जरूरत है। शहर में सिर्फ 34.7 प्रतिशत गर्भवती महिलाओं ही पूर्व-प्रारंभिक जांच की सुविधा का लाभ ले रही है। साथ ही अब 2 में से 1 महिला को अब डिलीवरी के बाद मिलने वाली मिल रही है जो वर्ष 2006 में 7 में से 1 महिला को मिल रही थी। राज्य में मां एवं बच्चे की सेहत में सुधार के लिए स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत बनाने की जरूरत है। इसके लिए अतिरिक्त संसाधनों, पैसे और निजी शर्तों पर पर्याप्त निवेश की जरूरत होगी।

आई.आई.एच.एम.आर. दिल्ली के निदेशक डॉ. संजीव कुमार की मानें तो गैर-संचारित रोग जैसे कि रक्तचाप, मधुमेह और कैंसर जानलेवा बीमारियों के रूप में उभरे हैं। भारत में एक साल इनके कारण कारण लगभग 1 करोड़ लोगों की मौत हो जाती है। इन स्थितियों को सुधारने के लिए विभिन्न क्षेत्रों की स्थिति में सुधार करने और इसके व्यापक बनाने की जरूरत है। पारंपरिक रूप से हम हम केवल मातृ शिशु स्वास्थ्य के आंकड़ों को ही देखते हैं। भारत में स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों की भारी कमी है जिसे दूर करने की जरूरत है वहीं सर्वे में सामने आया है कि चंडीगढ़ को 62 प्रतिशत अधिक स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की जरूरत है।

Publication: Times of India (TOI)**Page: 4****City: Chandigarh****Date: 16-06-2017**

Tricity needs 62% more healthcare providers: Expert

**Arjun Singh Sekhon
& Abhilasha Gosain**

Chandigarh: There is an urgent need of more healthcare providers in the tricity. Stress was laid on this aspect by Dr Sanjiv Kumar, director at the Indian Institute of Health Management and Research, at a conference held at a city hotel on Thursday.

Kumar touched the healthcare aspect of the Tricity, by stating that, "The Tricity needs 62% more healthcare providers. The Fourth National Family Healthcare Survey shows that while Chandigarh has succeeded in improving its health indicators, the current situation leaves a lot more room for improvement. Awareness and collaboration are the benchmarks of improvement in the healthcare sector."

Stressing on major causes of deaths in India, Dr Kumar said that, "1 crore Indians die annually. Of these, 60% are due to non-communicable diseases such as diabetes, high blood pressure and other cardiovascular diseases. The other reasons are generally traffic-related, nutrition-related and pregnancy-related deaths. Prioritizing on the causes is important in order



Director at the Indian Institute of Health Management and Research Sanjiv Kumar at a conference in Chandigarh on Thursday

to provide relevant curative measures."

He then went on to discuss the new health policy that focuses on the most peripheral health centres, like the sub-health centres, which is run by the nursing practitioners.

"The new health policy focuses on healthy individuals and the maintenance of their health through regular check-ups and raising awareness for living a balanced lifestyle. A major concern in the healthcare sector is the shortage of doctors despite the fact that the number of medical institutes have risen by over three times in the past few decades. In order to meet this challenge, digitization of

the entire sector is essential, especially of medical records, which are accessible from any location. These centres would provide holistic medical facility to patients and stress on the elderly segment of the population."

"There is a tele-machine system in Punjab, which has to be implemented across the country. There is also an Anmol (online) system, which is aimed at ending the drudgery of documentation of midwives, so as to return the focus on the treatment of patients. There is also a dire need to introduce the feedback system in the sector in order to bridge the gap between patients and doctors."

Publication: Dainik Savera

Page: 3

City: Chandigarh

Date: 16-06-2017

भारत में स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों की भारी कमी

चंडीगढ़ (राकेश): भारत ने अपने स्वास्थ्य क्षेत्र में प्रगति की है लेकिन इसके साथ ही मौजूदा स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक मजबूत बनाने के लिए खासकर ग्रामीण इलाकों में लोगों की स्वास्थ्य आवश्यकताओं की देखभाल के लिए पेशेवरों की संख्या में वृद्धि करने की जरूरत है। आईआईएचएमआर दिल्ली के निदेशक डा. संजीव कुमार ने यह जानकारी गुरुवार को दी। डा. कुमार ने कहा कि हाल के वर्षों में भारत में स्वास्थ्य परिदृश्य में बदलाव आया है। गैर-संचारित रोग जैसे कि रक्तचाप, मधुमेह और कैंसर जानलेवा बीमारियों के रूप में उभरे हैं। उन्होंने कहा कि हर साल 60 लाख लोग गैर-संचारी रोगों से मर जाते हैं। मार्च 2017 में जारी किए गए नए स्वास्थ्य सर्वेक्षण में ये बातें सामने आई हैं। इन स्थितियों को सुधारने के लिए विभिन्न क्षेत्रों की स्थिति में सुधार करने और इसके व्यापक बनाने की आवश्यकता है। आईआईएचएमआर दिल्ली ने सिफारिश की है कि चंडीगढ़ में प्राथमिक और द्वितीयक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में स्वास्थ्य कर्मियों की संख्या एनएचएम के दिशा-निर्देशों के अनुसार होनी चाहिए और राज्य के लिए स्वास्थ्य के वर्तमान बजट को अगले 5 वर्षों में मौजूदा स्वास्थ्य बजट को बढ़ाकर दोगुना कर देना चाहिए।